मैं अग्नि हूँ

जगती पर उगता हो जब तम
मेरा अस्त व दुष्टों का संभ्रम ।
क्षणिक हर्ष में जो जाएँ मति हार
मैं अग्नि करता उनका संहार ! ॥

शशि का रूप मैं तेज अरुण का
करता आलोकित इस वसुधा को ।
नवअंकुर बन उभरूँ जीवन का
नवचेतन देता मैं क्षण-क्षण को ॥

हास्य में रुदन, विजय में पतन
बनकर चलता मैं चिरंतन ।
गह्वर-कंदुर से मिटाकर निशा
दिखलाता सस्मित सर्वदा दिशा ॥

तिलस्मों को तोड़ता उन्मत्त हास
धरती को कर सकता मैं क्षार-क्षार ।
जलस्थल-नभ का प्राण-पक्षि;
मैं अंधकार में न्याय का अक्षि ॥

सीता की सतीत्व परीक्षा और
लंकादहन से मैं मिटाऊँ क्षुधा ।

जीवन याग में आहुति लेकर
अपमानित - सम्मानित मैं वृथा ।
विराजमान नगपति के ललाट पर
छूकर जिसे भस्म हुआ था काम ।
नीति मुझ ही में धर्म - अधर्म का पर
रक्षण - धर्म, मुझ अग्नि का काम ॥
क्रोधानल इस भू पर हूँ मैं
तप का ज्वार नभ - नग में हूँ ।
बहती धार में, संचार पत्रों में
अमर वह्नि हूँ; मैं अमर अग्नि हूँ ॥
दहन से दाह बुझाता ज्वार
मैं आदि, अंत करता यह संसार ।
श्लथ पथ, धर्मरथ पर सवार
अमर आग हूँ, "मैं अमर अग्नि हूँ" ॥

~~~ ❀ ~~~
~~~